रोजगार के साधन कुटीर उद्योग

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

बढ़ती हुई जनसंख्या के सामने सबसे बड़ी समस्या रोजगार की है। जैसे–जैसे जनसंख्या बढ़ रही है वैसे–वैसे रोजगार की समस्या भी बढ़ती चली जा रही है। इतना तो निश्चित ही है कि सभी पढ़े–लिखे लोगों को रोजगार नहीं मिल सकता। रोजगार के साधन सरकारी उपक्रमों और निजी संस्थानों में सुलभ हो सकते है। किन्तु इन उपक्रमों में वहीं रोजगार प्राप्त कर सकता है जो बौद्धिक रूप से सक्षम है। जहां तक कुटीर उद्योगों की बात है वहां पर यदि रोजगार के साधन सुलभ कराये जाये तो अधिक से अधिक लोगों को रोजगार सुलभ हो सकता है। जब विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने के बाद जीवनयापन करने के लिए सोचता है तो वह रोजगार की तलाश में इधर–उधर भटकता है। धीरे–धीरे उसकी उम्र विवाह के योग्य हो जाती है। परिवार का उत्तरदायित्व भी उसे संभालना पड़ता है। ऐसी स्थिति में जीवन निर्वाह करने के लिए रोजगार आवश्यक हो जाता है। यदि जीवनयापन करने के लिए कोई साधन नहीं है तो जीवन कष्टपूर्ण हो जाता है। बच्चों की पढ़ाई लिखाई और परिवार का भरण–पोषण कठिन हो जाता है। भारत की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। किन्तु सरकारी नीतियों और दलालों की दखलंदाजी से किसानों को कृषि उपज का उतना मूल्य नहीं मिल पाता जितना अपेक्षित है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि किसान दिनों–दिन गरीब होता जा रहा है। किसान को अन्नदाता कहा जाता है जो पूरे राष्ट्र का पेट भरता है। किन्तु जब उसकी स्थिति स्वयं दयनीय है तो वह राष्ट्र की सेवा कैसे कर सकता है। उसके बच्चे फटे पुराने कपड़े को पहनकर, सर्दी, गर्मी और वर्षा को सहन कर येनकेन प्रकारेण जीवनयापन करते है। गावों में न तो उच्चस्तरीय शिक्षा की व्यवस्था है और न चिकित्सा की। रोटी, कपड़ा, शिक्षा, चिकित्सा, यातायात के साधन ये सब लोगों की बुनियादी आवश्यकताएं है। यदि स्थानीय स्तर पर इनका समाधान नहीं होता तो लोगों में शहरों की तरफ पलायन की प्रवृत्ति हो जाती है। लोग गांव छोड़कर शहरों की तरफ भागते है। शहरों में छोटे–मोटे कार्यों को करके जीवनयापन करते है। शहरों में भी उनका जीवन दुःखमय रहता है। उद्योग–धन्धे शहरों में

अधिक है। इसीलिए लोग शहरों की तरफ पलायन करते है। सरकारी और गैरसरकारी उद्योग भी सीमित है। यहां पर भी जो अनुभवी और दक्ष होते है उन्हीं को वरीयता दी जाती है। जिससे जो कुशल कारीगर नहीं है उनके लिए समस्या का स्वरूप जैसे गांवों में था वैसे शहरों में भी रहता है। रोजगार के अभाव में ऐसे लोग चोरी–डकेती, लूट–खसोट आदि कार्य करके अपना और अपने परिवार का भरण पोषण करने का प्रयास करते है, जिसका परिणाम यह होता है कि समाज मे अव्यवस्था फैलती है। बेराजगारी को समाप्त करने का सबसे अच्छा साधन कुटीर उद्योग है। कुटीर उद्योग ऐसे उद्योगों को कहा जाता है जिसमें उत्पाद और सेवाओं का सृजन अपने घर में ही किया जा सके न की कारखाने में। कुटीर उद्योगों में कुशल कारीगरों द्वारा कम पूंजी एवं अधिक कुशलता से स्वयं के माध्यम से अपने घरों में वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। भारत में प्राचीनकाल से ही कुटीर उद्योगों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अंग्रेजों के भारत आगमन के बाद देश के कुटीर उद्योगों का ढ़ांचा ही ढह गया और कुटीर उद्योग तेजी से नष्ट होने लगे। स्वदेशी आन्दोलन के प्रभाव से पुनः कुटीर उद्योगों को बल मिला। वर्तमान समय में कुटीर उद्योग आधुनिक तकनीकी के समानान्तर भूमिका निभा रहे है। अब इनमें कुशलता और परिश्रम के अतिरिक्त मशीनों का भी उपयोग किया जाने लगा है। औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप बड़े–बड़े उद्योग लगाकर देश का तेजी से विकास किया गया। अंग्रेजों के भारत से बाहर जाने के बाद महात्मागांधी का विचार था कि आर्थिक उन्नति के लिए कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया जाये। लेकिन कुछ नेताओं का यह मन्तव्य था कि देश को प्रगति के पथ पर लाने के लिए और आर्थिक स्थिति को सुधारने के द्रुतगामी विकास होना चाहिए। इसीलिए भारत में विकास के लिए मिश्रित अर्थव्यवस्था को चुना गया। बड़े–बड़े उद्योगों की स्थापना के साथ ही साथ कुटीर उद्योग घटते गये और बेरोजगारी बढ़ती गई। जब तक लघु एवं कुटीर उद्योग को बढ़ावा नहीं दिया जायेगा बेरोजगारी की समस्या का समाधान नहीं हो सकता। लघु उद्योगों का मुख्य उद्देश्य रोजगार के अवसरों में वृद्धि करते हुए बेरोजगारी और अर्द्धबेरोजगारी की समस्या का समाधान करना है। लघु उद्यमों के श्रम प्रधान होने के कारण लागत कम और विनियुक्त पूंजी अपेक्षाकृत अधिक रोजगार कायम रखती है। ऐसे उद्योगों में आर्थिक शक्ति का समान वितरण होता है। कुटीर व लघु उद्योगों से आर्थिक

सत्ता का विकेन्द्रीयकरण होता है। साधारण जनता को अच्छी वस्तु उपलब्ध कराना इसका मुख्य उद्देश्य है। श्रम प्रधान तकनीकी के कारण श्रमिकों की संख्या अधिक होती है। जब अधिक लोगों को रोजगार मिलेगा तो बेरोजगारी धीरे–धीरे समाप्त होगी। लघु और कुटीर उद्योगों में कलात्मक एवं परम्परागत वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। इन उद्योगों में पारस्परिक सद्भावना, सहकारिता, समानता एवं भ्रातृत्व की भावना को बल मिलता है। ऐसे उद्योगों में प्राकृतिक संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग होता है। मानवीय मूल्यों की दृष्टि से सादा जीवन और उच्च विचार का सृजन होता है। व्यापार संतुलन और भुगतान संतुलन अनुकूल रहता है। अतः बेरोजगारी को दूर करने के लिए कुटीर उद्योग आवश्यक है।